International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 578-585

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 578-585
www.allresearchjournal.com
Received: 21-05-2017
Accepted: 22-06-2017

सरला चौधरी
पीएच.डी. (Student), आई.सी.एच. आर, दिल्ली, भारत

डॉ0 मंजू जोशी
Assistant Professor, जयपुर नैशनल विश्वविद्यालय, जयपुर

Correspondence
विनोद के. चाहर
पीएच.डी. (Student), आई.सी.एच. आर, दिल्ली, भारत

अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में शिक्षण कुशलता के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन

सरला चौधरी, डॉ0 मंजू जोशी

प्रस्तावना

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक अलग परम्परां अलग संस्कृति एवं सामाजिक मान्यताएं होती हैं। इन परम्पराओं मान्यताओं एवं संस्कृति के संरक्षण की बागडोर शिक्षा के हाथ में होती है। शिक्षा ही इन्हे संरक्षण प्रदान कर समूह बनाती है। किसी राष्ट्र व समाज को जानना परखना, समझना हो तो उस राष्ट्र की शिक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक होता है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्र को विकासशील बनाया जा सकता है। जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को दी जायेगी उसी प्रकार की राष्ट्र की भावी पीढ़ी होगी और राष्ट्र का भविष्य वैसा ही होगा। अर्थात राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा का महत्व समझा जाता है।

राष्ट्र के निर्माण में अध्यापक व शिक्षा दोनों प्रक्रिया का योगदान अतुलनीय है। शिक्षा का यह महत्व अन्तकालीन है क्योंकि उसका सीधा संबंध जीवन की अनन्तता के साथ है। शिक्षा से चरित्र निर्माण होता है। आज के युग में शिक्षक का दायित्व बहुत बढ़ गया है। वह बालक के चरित्र निर्माण के रूप में प्रयुक्त होता है।

''शिक्षा आयोग ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत का भाग्य निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से शिक्षकों के हाथ में है।''

प्रोफेसर हुमांयु कबीर के शब्दों में ''शिक्षा प्रणाली की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली का भी असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।''

योग्य एवं कुशल अध्यापकों द्वारा ही बालकों को उचित शिक्षा दी जाती है। योग्य व कुशल शिक्षक के बिना बालकों को उचित शिक्षा नही मिल सकती है। शिक्षक एक दीपक के समान होता है जो प्रकाश रूपी ज्ञान देता है। आयोग ने सुझाव किया कि शिक्षा व्यवस्था की ओर प्रतिभाशाली व्यक्तियों को आकर्षित करने के लिए शिक्षकों की आर्थिक सामाजिक व्यावसायिक स्थिति को स्थिति बनाना बहुत आवश्यक है। जिससे वे रूचि जोश और उत्साह से अपने कार्य को कर सकें। भले ही हमारे शैक्षिक उद्देश्य बहुत उच्च हों। पाठ्य सामग्री राष्ट्रीय समांकलन तथा भावात्मक एकता के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हो।

परन्तु कई बार अध्यापकों के इस प्रगति कार्य में कुछ रूकावटें आ जाती हैं, जिस कारण वह अध्यापन को सुचारू रूप से निरन्तर नहीं बना पाता। शिक्षा को सम्पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए आवश्यक है कि अध्यापक के लिए उचित परिस्थितियों का निर्माण हो क्योंकि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है और अध्यापक प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन को सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक रंग प्रदान करके सभ्य सुसस्कृंत तथा प्रगतिशील बनाती है।

पी.सी. बेनर्जी के अनुसारः– सतत् परिवर्तनशील अनुकूलन की क्षमता के विकास का नाम ही शिक्षा है।

पारिवारिक परिस्थितियों के कारण अध्यापन कार्य काफी हद तक प्रभावित हो रहा है। अध्यापकों के परिवार में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। जिस कारण वह ज्ञान का विकास नहीं कर पाता अर्थात शिक्षण तरफ ज्यादा ध्यान नहीं बना पाता। कक्षा में छात्रों की व्यक्तिगत समस्याएं सुनना नहीं चाहता जिस कारण अध्यापक और बच्चों के बीच अच्छा सम्बन्ध नहीं बन पाता। शिक्षण प्रक्रिया तभी प्रभावशाली हो सकती जब अध्यापक, छात्र तथा शैक्षिक वातावरण आपस में एक दूसरे से अच्छी प्रकार संबंधित होंगे अध्यापक को अनेक समस्याएं होती है। जो व्यक्तिगत रूप से अध्यापक के व्यवहार को प्रभावित करती है। निम्न समस्याएं हैं जो शिक्षण को प्रभावित कर सकती हैं।

1. आर्थिक कारण
2. सामाजिक कारण
3. राजनैतिक कारण
4. व्यक्तिगत कारण
5. भौगोलिक परिस्थितियों

अध्यापक का व्यवहार

किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के व्यवहार को परखा जाता है। लेकिन एक अध्यापक के व्यवहार को अधिक महत्व दिया जाता है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली में अध्यापक के व्यवहार को सबसे प्रमुख माना जाता है। इसलिए अध्यापक के व्यवहार का प्रभाव छात्रों पर सक्रिय रूप से देखा जा सकता है। हम अपने वातावरण में दूसरे सामने प्रतिक्रिया करते हैं वह हमाराव्यवहार कहलाता है। कई बार व्यवहार स्थायी रूप में भी किया जा सकता है। कई बार यह अस्थायी भी होता है।

व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक

व्यवहार को प्रभावित करने के लिए दो प्रमुख कारक माने जाते हैः–

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण

1. वंशानुक्रम

प्रायः देखा जाता है कि जैसे माता–पिता होते हैं, वैसे ही उनकी संतान होती है। बुद्धिमान माता–पिता की सन्तान बुद्धिमान और मूर्ख माता–पिता की संतान मूर्ख होती है। इसलिए जन समान्य में यह सिद्धांत प्रचलित है कि जैसा बीज होगा पेड़ भी वैसा ही होगा। भारतीय समाज में वंशानुक्रम के आधार पर लोग अस्पृस्य और घृणित समझे जाते है और जहां भाग्यवाद का बोलबाला है वहां वंशानुक्रम के सिद्धांत को आप्त वाक्य मानना, उसे मानव जीवन के सम्पूर्ण जीवन का निर्माता मानना असम्भव नही है। अतः यह माना जाता है कि व्यक्ति के व्यवहार को वंशानुक्रम कारण प्रभावित करते हैं। अध्यापक के परिवार के वातावरण का प्रभाव अध्यापक के शिक्षण का प्रभाव अध्यापक के शिक्षण कार्य को काफी प्रभावित करता है।

2. वातावरण

हमारे चारों और का वह आवरण जिसमें व्यक्ति क्रिया–प्रतिक्रिया करता है तथा सांस लेता है। सांस छोड़ता है वह सब उसका वातावरण कहलाता है।

हॉलैण्ड ने अपनी पुस्तक 'एजूकैशनल साईकोलोजी' में वातावरण शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है – वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाह्य शक्तियां प्रभावी और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है, जो जीवनधारी के जीवन स्वभाव, व्यवहार और अभिवृद्धि विकास तथा प्रौढ़ता पर प्रभाव डालता है।

अध्यापक का व्यक्तित्व

यद्धपि 'व्यक्तित्व' शब्द बहुत व्यापक है और व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग हम विभिन्न अर्थों में किया करते हैं। परंतु जब आप कहते हैं कि राम का व्यक्तित्व बहुत अच्छा है। तब प्रायः इसका तात्पर्य होता है कि राम की शारीरिक रचना बहुत ही सुन्दर है। वह देखने में स्वच्छ सुन्दर है। यदि कोई व्यक्ति अपने विचारों को व्यक्त कर सकता है। दूसरों को अपने ढंगों से आकर्षित कर सकता है तो वह अवश्यक ही सफल हो सकता है। क्योंकि यह सब अपने गुण समझे जाते हैं। परंतु वास्तविक रूप में यह विचार त्रुटिपूर्ण हैं। यह तो कि व्यक्तित्व के अन्दर सब बातें आती है।

वारेन के अनुसार – 'व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।'

अध्यापक का व्यक्तित्व

विद्यालय में अध्यापक सबसे प्रमुख व्यक्ति होता है। जो बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता प्रदान करता है। अधिकतर बालकों के अन्दर अध्यापक उनकी मुख्य आवश्यक तथा रूचि के अनुसार ही परिवर्तन लाने की सोचता है। जिससे प्रत्येक बालक एक और अपने अन्दर उचित परिवर्तन को उत्पन्न कर सके। विकमैन के अध्ययनों में अध्यापकों ने उन बालकों को समस्यात्मक समझा जिनके अन्दर काम करने में लापरवाही, बातचीत, कक्षा में अनुचित ढंगों का प्रयोग, रूचि की कमी आदि आदतें पड़ गई थी।

शिक्षण पर अध्यापक के व्यक्तित्व का प्रभाव

अध्यापक के व्यक्तित्व का तथा उसके व्यवहार का शिक्षण पर प्रभाव पड़ता है। अध्यापक को पारिवारिक परिस्थितियों के कारण व्यक्ति के व्यवहार में प्रभाव पड़ता है। जिस कारण अध्यापक विद्यालय में संतुष्ट होकर शिक्षण कार्य नही करवा सकता। पारिवारिक परिस्थितियां अध्यापन कार्य में प्रमुख रूप से योगदान देती है। क्योंकि यदि व्यक्ति के मन में चितां होगी तो वह शिक्षण सही ढंग से नही कर पाता। ये स्थितियां निम्नलिखित होती हैः–

1. पारिवार के रहन–सहन का स्तर
2. परिवार में आय के साधनों की कमी।
3. सदस्यों का आपसी सम्बन्ध।
4. आर्थिक स्थिति।
5. समाज में समायोजन

शिक्षक एवं उनका समायोजन

अध्यापकों की उचित शिक्षा के बिना शिक्षा का कोई भी कार्यक्रम सफल नही हो सकता। इसमें कोई संदेहः नही है कि शिक्षा का स्तर अध्यापकों के गुणों पर निर्भर करता है और अध्यापक के गुण उसके प्रशिक्षण पर निर्भर करते हैं।

सैकेण्डरी शिक्षा आयोग – 'हम इस बात को मानते हैं कि प्रस्तावित शिक्षा के पूर्णनिर्माण में अत्याधिक महत्वपूर्ण तत्व अध्यापक है। उसके व्यक्तित्व गुण उसकी शैक्षणिक योग्यताएं, उसका व्यवसायिक प्रशिक्षण और स्कूल एवं समाज में उसका स्थान ये सब अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः शिक्षा के स्तर को उंचा करने तथा उसे निरंतर सुधारते रहने के लिए अध्यापकों को सर्वोत्तम प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।'

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक

1. अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य दूषित होने के कारण – अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालने वाले कुछ तत्व है। उनके वंश में मानसिक विकृति, कोई व्यक्ति रहा हो।
2. नौकरी के स्थायित्व का अभाव – भारत में इस बात को अस्वीकार नही किया जा सकता कि निम्न वेतन तथा हीन स्तर के कारण वे लोग अध्ययन पसंद नही करते, जिनको और कहीं कोई जीवनयापन का साधन नही मिलता। इसके अनुदान प्राप्त विद्यालयों में अध्यापकों की अवस्था बड़ी ही दयनीय है। इनकी नौकरी की कोई सुरक्षा नही होती और वह अधिकतर विद्यालय की कार्यकारिणी के मुख्य पदाधिकारी के उपर निर्भर करती है। जो स्वंय अक्सर पढ़े लिखे नही होते और शिक्षा के लिए कोई रूचि नही रखते।

शिक्षण में अध्यापक की भूमिका

साधारण अर्थों में शिक्षण का अर्थ अध्यापक वर्ग द्वारा अपनाए गए व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सिखाने या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रूचियों और अभिवृति आदि को अर्जित करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।

एच.सी.एम. को – शिक्षण एक अधिक परिपक्व व्यक्तित्व और कम परिपक्व व्यक्ति के बीच वह घनिष्ट संपर्क है। जिसके द्वारा कम परिपक्व शक्ति को शिक्षा की दिशा में और आगे बढ़ाया जा सकता है।

बी.ओ. सिम्थ शिक्षण सिखने हेतू सम्पन्न की जाने वाली क्रियाओं की एक प्रणाल है।

संक्षेप में शिक्षक से संबंधित निम्न बातें या कारक शिक्षण को प्रभावित करने की क्षमता रखते है।

1. शिक्षक कला अपने आपसे अपने वातावरण से तथा व्यवस्था से समायोजन का स्तर।
2. शिक्षक की शिक्षण व्यवस्था में रूचि व्यावसायिक संतुष्टि तथा अपने कार्यों के प्रति प्रतिबध तथा जवाबदेही।
3. अध्यापक जैसा व्यक्तित्व एवं व्यवहार जो उसे अच्छे शिक्षण हेतू आवश्यक आधार प्रदान कर सके।

इस कार्य हेतू अध्यापक में निम्न गुणों की उपस्थिति, अनुपस्थिति, उसका शिक्षण को अनुकूल याप्रतिकूल रूप से प्रभावित करने की प्रयाप्त क्षमता रखती है।

1. सप्रेषण कौशल
2. दूसरों के विचारों को समझने की क्षमता
3. छात्रों से संप्रेषण हेतू पर्याप्त सहनशीलता, शान्ति, सहनशीलता, सहयोग, क्षमा, आदि भावों की उपस्थिति।
4. छात्रों से शिक्षण से संबंधित जिन व्यवहारगत बातों गुणों या आदतों की उपक्षा की जाती है उन्हें अपने व्यवहार और व्यक्तित्व में उतारकर एक आदर्श उदाहरण बन सकने की क्षमता।
5. शिक्षण विधियों और तकनीकी की पूरी जानकारी तथा उन्हे आवश्यकतानुसार उपयोग करने का कौशल।

शिक्षण में शिक्षक प्रभावशीलता

एक प्रभावशाली शिक्षक को अत्यावश्यक शिक्षण कलाओं में परांगत होना चाहिए। शिक्षक को व्यावहारों की श्रृंखला माना गया है जो कि विद्यार्थी के उच्च स्तर के निष्पादन से संबंधित है।

शिक्षण कलाओं का वर्णन इस प्रकार से हैः–

1. **व्यवस्थापन –** शिक्षक अपने कार्यों में व्यवस्थित होने चाहिए। दो प्रकार के व्यवस्थापन शिक्षण में महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। प्रशासनिक अवधारणीय, प्रशासनिक व्यवस्थापन में उन शिक्षकों के व्यवहारों की श्रंखला होती है। जो शिक्षण समय में वृद्धि और शिक्षण कार्य में व्यवधानों में कमी की ओर किये जाते हैं। अवधारणीय व्यवस्थापन में शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों के समझ स्पष्ट तथा तार्किक ढंग से विचारों का प्रस्तुतीकरण।
2. **संचार –** संचार और विद्यार्थी निष्पादन में निकटता का संबंध है। प्रभावशाली विचारों का आदान–प्रदान विद्यार्थियों को संतोषजनक उतर देता है और सीखने में सहायता देते है।
3. **केन्द्रीयकरण –** शिक्षकों में यह कुशलता होनी चाहिए कि वह जो पाठ पढ़ाया जा रहा है। जो कार्य किया जा रहा है। उस और विद्यार्थियों के ध्यान का केन्द्रीयकरण कर सकें। पाठ की ओर केन्द्रीयकरण करने से विद्यार्थियों का ध्यान सीखने की क्रिया की ओर खींचा जाता है और बना रहता है।
4. **पृष्ठपोषण –** इससे तात्पर्य है 'वर्तमान व्यवहार के बारे में सूचना जिसका उपयोग भविष्य में निष्पादन के लिए किया जा सकता है' सीखने में प्रगति में बहुत सहायक होता है।

अध्यापक की शिक्षा अथवा शिक्षण

अध्यापकों की उचित शिक्षा के बिना शिक्षा का कोई भी कार्यक्रम सफल नही हो सकता। किसी भी शिक्षा प्रणाली में अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अध्यापकों के चारों ओर घूमती है। वह विद्यार्थी को अज्ञानता के अन्धकार से बाहर प्रकाश की ओर ले जाता है। शिक्षा में शिक्षक छात्र के व्यक्तित्व के सभी तत्व शामिल होते है।

अध्यापक के लिए आवश्यक योग्यता

1. बच्चे का ज्ञान होना चाहिए अर्थात उन्हे बच्चे की योग्यताओं रूचियों का ज्ञान होना चाहिए।
2. सीखने–सिखाने का ज्ञान होना चाहिए।
3. पाठ्य सहायक क्रियाओं के गठन का ज्ञान होना चाहिए।
4. निर्देशन को संगठित करने का ज्ञान होना चाहिए।
5. मूल्यांकन विधियों का ज्ञान होना चाहिए।

अध्यापक व छात्रों का आपसी संबंध

1. सभी अध्यापकों को विद्यार्थियों के साथ प्रेम और स्नेहपूर्वक व्यवहार करना होगा और बिना किसी लिंग, जाति, स्वर, धर्म, भाषा के भेदभाव के सभी से न्यायपूर्ण व्यवहार करना होगा।
2. छात्रों को उनके सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, भावात्मक, शारीरिक व मानसिक चरित्र में सहयोग देना होगा।
3. वैज्ञानिक दृष्टि अपनाने और खोज करने के लिए प्रेरित करना होगा और उनमें रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति और रूचि को विकसित करना और उनको प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना होगा।
4. शारीरिक कार्य और कार्यकर्ता के लिए छात्रों में आदर की भावना का विकास करना होगा।
5. अपनी सम्पन्न संस्कृति व अनेकता में एकता के लिए विद्यार्थियों में प्रशंसा व गौरव की भावना का विकास करना होगा।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षक को बालकों का निर्माता माना जाता है। शिक्षक को ज्ञान का भण्डार भी कहा जाता है। बिना शिक्षक के शिक्षा प्राप्त करना असम्भव व कठिन कार्य है। शिक्षकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण समाज ने उन्हे वह स्थान नही दिया जो देना चाहिए था। आर्थिक दृष्टि से कमजोर शिक्षक अपने शिक्षण कला में प्रतिभाशाली नही हो सकता। आर्थिक परिस्थितियां शिक्षण को कई प्रकार से प्रभावित करती है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग का शिक्षक कभी भी पठन–पाठन में अपना सम्पूर्ण मन अर्पित नही कर सकता। उसका मन धनोपार्जन के उपायों की खोज में लगा रहता है। उसका प्रभाव उनकी शिक्षण कला पर अवश्य पड़ता है। शिक्षक के संवेगों का उचित विकास आवश्यक है। संवेगों के विकास में वातावरण महत्वपूर्ण है। वातावरण अनेकानेक तथ्य सनिहित है। पारिवारिक परिस्थितियों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शिक्षक की पारिवारिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। यदि किसी अध्यापक को उचित खान–पान, कपड़े, रहने के लिए उचित स्थान, सोने की सुविधा आदि का अभाव है तो अध्ययन कार्य कुशलता पूर्वक नही हो सकता। अतः इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अध्ययनकर्ता ने इस विषय को चयन किया है।

समस्या कथन

अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों के परिपेक्ष में शिक्षण कुशलता के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन।

अध्ययन का परिभाषीकरण

अध्यापक : एक ऐसे पेड़ के समान है जो सभी को समान से ज्ञान रूचि छाया प्रदान करता है।

पारिवारिक परिस्थिति – पारिवारिक परिस्थिति के अन्तर्गत परिवार के सदस्यों की संख्या उनका व्यवहार उनकी संवेगात्मक, आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक स्थिति आती है।

शिक्षण कुशलता – शिक्षण कुशलता किसी अध्यापक की वह कुशलता है जिससे वह शिक्षण में दक्ष होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थिति का उसकी कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन।
2. अध्यापकों के अभिभावकों की शिक्षा का उसकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन।
3. अध्यापकों की जाति का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन।
4. अध्यापकों के निवास का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन।
5. अध्यापकों के लिंग का उनकी शिक्षण कुशलता का प्रभाव का अध्ययन।
6. ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले अध्यापकों का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन।
7. शहरी क्षेत्र में रहने वाले अध्यापकों का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. सामान्य जाति के अध्यापकों व अनुसूचित जाति के अध्यापकों का उसकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव में कोई अन्तर नहीं होगा।
2. शहरी ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले अध्यापकों का एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले अध्यापकों का उनकी शिक्षण, कुशलता पर प्रभाव में कोई अन्तर नही होगा।

अध्ययन की परिसीमा

यह अध्ययन सिरसा जिले के ऐलनाबाद तहसील क्षेत्र तक सीमित है।

अध्ययन की जनसंख्या

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य एक विशिष्ट समूह की समस्त ईकाइयों से है जो अध्ययनकर्ती के अध्ययन में सम्मिलत है। जनसंख्या को परिभाषित करते हुए यंग ने लिखा है कि 'वह समस्त समूह जिसमें से प्रतिदर्श का चयन किया जाताहै, जनसंख्या समष्टि या सप्लाई कहलाता है।' जनसंख्या मुख्यतः दो प्रकार की हो सकती है। जब अध्ययन में सम्मिलित सभी ईकाईयों की संख्या निश्चित होती है तो वे परिमित जनसंख्या कहलाती है। जैसे कोई विद्यालय या संस्था आदि इसी प्रकार जब अध्ययन में सम्मिलित सभी इकाईयों की संख्या निश्चित नही होती तो वे अपरिमित जनसंख्या कहलाती है जैसे सब वर्ग, आयु या लिंग के लोग। 'प्रस्तुत शोधकार्य में ऐलनाबाद के सभी प्राथमिक स्कूलों के अध्यापक और विद्यार्थी इसकी जनसंख्या है।'

अध्ययन का न्यायदर्श

जब अध्ययन जनसंख्या अपरिमित होती है या अध्ययनकर्ता द्वारा जनसंख्या की प्रत्येक ईकाई से आंकड़े इकट्ठे करना किसी कारणवश सम्भव न हो तब सम्पूर्ण जनसंख्या में से कुछ इकाईयों का चयन करके उनका अध्ययन किया जाता है व उनसे प्राप्त परिणाम को सम्पूर्ण जनसंख्या पर लागू किया जाता है। इन चयनित इकाईयों के समूह को न्यायदर्श व प्रतिदर्श कहा जाता है।

गुडे व हॉट के अनुसार 'प्रतिदर्श जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है कि विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।'

अध्ययन की विधि

शोधकार्य में शोधकर्ती ने उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए ऐलनाबाद ब्लॉक में चल रहे सभी सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में से 5 सरकारी विद्यालयों का चयन किया है। इन माध्यमिक विद्यालयों में से संयोगिक विधि की सहायता से 200 छात्र और 20 शिक्षकों का चुनाव किया गया है।

अध्ययन का उपकरण

अनुसंधान कार्य में समस्या के निश्चित एवं परिकल्पना निर्माण के बाद प्रमुख समस्या, परिकल्पना के लिए परीक्षण के लिए आंकड़ों का संग्रह करने तथा आकड़ों के संग्रह के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरणों के चयन से संबंधित होती है। इस स्थिति में अनुसंधानकर्ती उपलब्ध उपकरणों का विशलेषण करके उपयुक्त उपकरण का चयन स्वरूप एकत्रित सभी आंकड़ें अनुपयोगी साबित होगें।

डा0 जे डब्ल्यू बैस्ट के अनुसार – 'उपकरण बढ़ई के उन औजारों की भांति है जो विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विशिष्ट परिस्थितियों में उपयुक्त होते हैं। उपकरण स्वनिर्मित तथा प्रमाणीकृत होते हैं। स्वनिर्मित उपकरणों का निर्धारण शोधकर्ती अपनी समस्या के अनुसार स्वंय करता है। जबकि प्रमाणीकृत उपकरण वे उपकरण होते हैं जो पूर्ण निर्मित होते हैं। ये वे मनोवैज्ञानिक उपकरण होते हैं जिनका निर्माण मानवीय व्यवहारों के लिए विभिन्न पक्षों अथवा आन्तिरिक गुणों का मापन करने के लिए किया जाता है।'

प्रश्नावली

अनुसंधान कार्य में आंकड़े एकत्रित करने का यह महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें अनेक प्रश्नों का समूह होता है। जब इसका उपयोग व्यक्ति के व्यक्तित्व या व्यवहार का मापन करने के लिए होता है तो इसे तालिका कहते हैं। व्यक्तियों से सूचना प्राप्त करने के लिए बनाए गए प्रश्नों की क्रमबद्ध सूचि को प्रश्नावली कहते हैं।

गुड आर हॉट के अनुसार – इन्होंने प्रश्नावली को परिभाषित करते हुए लिखा है कि – 'प्रश्नावली एक प्रकार का उत्तर प्राप्त करने का साधन है। जिसका उत्तर ऐसा होता है कि उत्तरदाता उसकी पूर्ति स्वंय करता है।'

प्रश्नावली का संचालन

शोध कार्य में अध्ययन करने के लिए शोधकर्ती ने स्वंयनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

सांख्यिकीय पद्धतियां

आंकड़ों के विश्लेषण हेतू सांख्यिकीय पद्धतियों का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार से हैं

प्रतिशत विधि – आंकड़ों के विश्लेषण हेतू प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है।

भूमिका

आंकड़ों की व्याख्या या विश्लेषण करने का अर्थ है आंकड़ों या तथ्यों को तालिका या सरल रूप में व्यवस्थित करना।

समाज–शास्त्र, मनोविज्ञान, और शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान उपकरणों निरीक्षण, साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली और मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से जो सूचनाएं या तथ्य सामग्री एकत्रित की जाती है, उन्हे आंकड़े कहते हैं। ये आंकड़े जिस रूप में प्राप्त होते हैं, उस रूप में इससे उचित निष्कर्ष नही निकाल जा सकते, जब तक उन्हे उद्देश्य अनुरूप विश्लेषण कर इनका सांख्यिकीकरण नही किया जाता। विश्लेषण का अर्थ है कि एकत्रित वस्तुओं को अलग–अलग करना। इस प्रकार इस प्रक्रिया में समस्या को हल करने के लिए उसे छोटे–छोटे भागों में विभक्त किया जाता है। इस प्रकार हम अज्ञात से ज्ञात की ओर व निष्कर्षों से तथ्यों की ओर पहुंचने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार समस्याओं का विभिन्न भागों में विच्छेदन करना ही विश्लेषण होता है। इस प्रणाली या प्रक्रिया का प्रयोग जटिल समस्याओं को हल करने में किया जाता है। वास्तव में विश्लेषण वह प्रक्रिया होती है जिसमें अनुसंधान कार्य अपना रूप परिवर्तित करता जाता है, यानि समस्या के चयन से प्रारंभ हुआ कार्य परिणाम की ओर अग्रसर होता चला जाता है। व्याख्या द्वारा परिणाम का आलोचनात्मक परीक्षण किया जाता है। व्याख्या के बिना कोई भी शोधार्थी अपने शोध के लक्ष्यों को प्राप्त नही कर सकता। जब तक आंकड़ों की व्याख्या या सामान्यीकरण नही किया जाता तब तक उनका कोई महत्व नही होता।

प्रस्तुत लघु शोध में 'ऐलनाबाद तहसील में अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में शिक्षण कुशलता के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन' करने के लिए ऐलनाबाद ब्लॉक के 5 विद्यालयों का निरीक्षण किया गया है। इस शोध कार्य में एकत्रित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण इस प्रकार है–

तालिका 1: अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों का अध्ययन

क्र.	सदस्यों की संख्या	सम्बन्ध	स्तर	विचारों की सहमति	त्यौहार	निर्णय लेने में सहायता	मुख्य व्यवसाय	मासिक आय	मेज–कुर्सी	वाहन	अभिभावक शिक्षा	सकारात्मक पक्ष	नाकारात्मक पक्ष
1	4	सहयोगात्मक	सामान्य	3	2	3	नौकरी	21000	4	2		80.6%	19.4%
2	2	प्रेरणात्मक	मध्य	2	2	5	अध्यापन	20000	6	1		80.3%	19.7%
3	3	प्रेरणात्मक	उच्च	3	3	5	कृषि	15000	4	1	10^{th}	72.5%	27.5%
4	3	प्रेरणात्मक	निम्न	3	2	4	नौकरी	15000	4	2	10^{th}	75%	25%
5	3	सहयोगात्मक	उच्च	3	3	2	अध्यापन	10000	4	2	B.A.	78.5%	21.5%
6	2	सहयोगात्मक	मध्य	2	2	3	अध्यापन	15000	7	1		79.0%	20.9%
7	2	सहयोगात्मक	मध्य	2	1	3	अध्यापन	18000	4	2	5^{th}	80%	20%
8	4	सहयोगात्मक	मध्य	2	2	4	अध्यापन	15000	3	1		76.8%	23.1%
9	5	सहयोगात्मक	मध्य	3	2	3	अध्यापन	5000	3	2		78.1%	21.8%
10	4	सहयोगात्मक	मध्य	2	2	2	नौकरी	15000	8	2	5^{th}	80%	20%
11	3	प्रेरणात्मक	मध्य	2	3	2	कृषि	20000	3	1		80.9%	19.06%
12	2	सहयोगात्मक	मध्य	2	1		कृषि	10000	7	2	10^{th}	79.3%	20.6%
13	3	सहयोगात्मक	उच्च	3	1	2	कृषि	25000	3	1	12^{th}	78.7%	21.2%
14	4	प्रेरणात्मक	मध्य	4	2	3	अध्यापन	25000	7	3		83.7%	16.3%
15	4	प्रेरणात्मक	निम्न	3	3	4	नौकरी	10000	3	1		81.5%	18.34%
16	4	प्रेरणात्मक	निम्न	4	1	3	नौकरी	5000	7	1		82.1%	17.8%
17	5	प्रेरणात्मक	मध्य	4	1	2	कृषि	5000	12	1		83.1%	16.8%
18	3	संवेगात्मक	मध्य	3	1	3	कृषि	15000	3	2	10^{th}	79.0%	20.9%
19	4	संवेगात्मक	निम्न	2	3	4	अध्यापन	14000	4	2		84.6%	15.4%
20	2	सहयोगात्मक	उच्च	2	2	2	अध्यापन	15000	4	3	5^{th}, 10^{th}	81.5%	18.4%

1. अध्ययकर्ती द्वारा उपर्युक्त सारणी के आधार पर अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए छात्रों की सहमति और असहमति के आधार पर यह पाया गया कि अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या 4 है। आपसी सम्बंधसहयोगात्मक है। स्तर सामान्य, विचारों की सहमति 3 सदस्यों द्वारा, प्रमुख 2 त्यौहार मनाए जाते हैं। निर्णय लेने में घर के तीन सदस्यों का सहयोग प्राप्त होता है। मुख्य व्यवसाय नौकरी है। मासिक आय 21000 रू. है। मेज–कुर्सी की संख्या 4 तथा आने जाने के लिए 2 वाहन हैं। इस पर छात्रों का पक्ष 80.6% साकारात्मक व 19.4% नाकारात्मक पाया गया है।
2. दूसरे अध्यापकों के परिवार के सदस्यों की संख्या 4 है। सदस्यों का आपसी संबंध सहयोगात्मक, विचारों की सहमति घर के 3 सदस्यों द्वारा दी जाती है। प्रमुख रूप से 2 त्यौहार मनाए जाते हैं। आने–जाने हेतू 5 साधन, व्यवसाय – अध्यापन, मासिक आय – 20000रू., कुर्सी–मेज संख्या 6, माता–पिता की शिक्षा – अनपढ़ तथा इस पर छात्रों का 80. 3% साकारात्मक व 19.7% नाकारात्मक पाया गया।
3. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या 3, सदस्यों का आपसी संबंध प्रेरणात्मक है, परिवार के रहन–सहन का स्तर उच्च है, घर में 3 सदस्यों के द्वारा विचारों की सहमति दी जाती है। प्रमुख रूप से 2 त्यौहार घर में मनाए जाते हैं। निर्णय लेने के लिए घर के 3 सदस्यों का सहयोग मिलता है। प्रमुख व्यवसाय कृषि है। मासिक आय 15000 रू. है। घर में कुर्सी–मेज संख्या 4 है। आने जाने हेतू 2 वाहन हैं। अध्यापक के माता–पिता की शैक्षिक योग्यता 10वीं पास है। अत% छात्रों द्वारा शिक्षण कुशलता के प्रति दृष्टिकोण देखने पर 72.5% साकारात्मक व 27.5% नाकारात्मक पाया गया।
4. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या 3 है। सदस्यों का आपसी संबंध प्रेरणात्मक है। परिवार के रहन–सहन का स्तर निम्न है, घर में 3 सदस्यों के द्वारा विचारों की सहमति दी जाती है। प्रमुख रूप से 2 त्यौहार घर में मनाए जाते हैं जिनमें घर के सभी सदस्य एकत्रित होते हैं। निर्णय लेने के लिए घर के 3 सदस्यों का सहयोग मिलता है। प्रमुख व्यवसाय नौकरी मासिक आय 15000 रू. है। घर में कुर्सी–मेज संख्या 4 है। आने जाने हेतू 2 वाहन है। अध्यापक के पिता की शैक्षिक योग्यता 10वीं पास है। अत% छात्रों द्वारा अध्यापक की पारिवारिक परिस्थिति के प्रति दृष्टिकोण जानने के बाद यह पाया गया कि उनका साकारात्मक पक्ष 75% व नाकारात्मक पक्ष 25% पाया गया।
5. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या 3 है। सदस्यों का आपसी संबंध सहयोगात्मक है। परिवार के रहन–सहन का स्तर उच्च है, घर में 2 सदस्यों के द्वारा विचारों की

सहमति दी जाती है। प्रमुख रूप से 2 त्यौहार घर में मनाए जाते हैं। निर्णय लेने के लिए घर के 4 सदस्यों का सहयोग मिलता है। प्रमुख व्यवसाय कृषि व मासिक आय 10000 रू. है तथा घर में सुविधा के लिए कुर्सी–मेज संख्या 4 है। आने जाने हेतू 1 वाहन हैं। अभिभावकों की शिक्षा बी.ए. तक है, छात्रों के द्वारा 78.5% सहमति व 21.5% असहमति पाई गई।

6. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या 2, आपसी संबंध सहयोगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–2, निर्णय लेने में सहयोग – 2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय नौकरी, मासिक आय 15000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी–7, आने जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों की 79% सहमति तथा 20.9% छात्रों ने असहमति प्रकट की है।
7. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–2, आपसी सम्बन्ध सहयोगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख – 2, निर्णय लेने में सहयोग – 2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय नौकरी, मासिक आय 18000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –5, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों की 80% सहमति तथा 20. 9% छात्रों ने असहमति प्रकट की है।
8. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–4, आपसी सम्बन्ध सहयोगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–3, निर्णय लेने में सहयोग –3 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय नौकरी, मासिक आय 15000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी – 3, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों का दृष्टिकोण जानने के बाद 76.8% सहमति तथा 23.1% असहमति प्राप्त होती है।
9. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या – 5, आपसी सम्बन्ध सहयोगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 3 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख – 2, निर्णय लेने में सहयोग – 4 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय नौकरी, मासिक आय 5000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –3, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–3, छात्रों की 76.8% सहमति तथा 23.1% छात्रों ने असहमति प्रकट की है।
10. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–4, आपसी सम्बन्ध सहयोगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख – 2, निर्णय लेने में सहयोग – 3 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय कृषि, मासिक आय 15000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी–8, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या –2, पिता की शैक्षिक योग्यता 5वीं पास है। छात्रों द्वारा 80% सहमति तथा 20% असहमति प्राप्त होता है।
11. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–3, आपसी सहयोग प्रेरणात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–3, निर्णय लेने में सहयोग–2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय कृषि, मासिक आय 2000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –3, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों की 80% सहमति तथा 19.6% असहमति प्राप्त होता है।
12. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या –2, आपसी सहयोग सहयोगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–1, निर्णय लेने में सहयोग–2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय कृषि, मासिक आय 10000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –7, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–2, पिता की शिक्षा 10वीं पास, छात्रो ंका दृष्टिकोण जानने के बाद 79.3% सहमति तथा 20.6% असहमति प्राप्त होती है।
13. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या –3, आपसी सहयोग सहयोगात्मक, परिवार का स्तर उच्च, विचारों की सहमति 3 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–1, निर्णय लेने में सहयोग – 2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय कृषि, मासिक आय 25000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी–3, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, पिता की शिक्षा 12वीं पास, छात्रों का दृष्टिकोण जानने के बाद 78% सहमति तथा 21.2% असहमति प्राप्त होती है।
14. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–4, आपसी सम्बन्ध प्रेरणात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 4 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–2, निर्णय लेने में सहयोग–3 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय अध्यापन, मासिक आय 25000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी – 7, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–3, छात्रों का दृष्टिकोण जानने के बाद 83.7% सहमति तथा 16.3% असहमति प्राप्त होती है।
15. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–4, आपसी सम्बन्ध प्रेरणात्मक, परिवार का स्तर निम्न, विचारों की सहमति 3 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–3, निर्णय लेने में सहयोग–4 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय नौकरी, मासिक आय 10000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –3, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों दृष्टिकोण जानने के बाद 81.5% सहमति तथा 18.4% असहमति प्राप्त होती है।
16. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–4, आपसी सम्बन्ध प्रेरणात्मक, परिवार का स्तर निम्न, विचारों की सहमति 4 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख – 2, निर्णय लेने में सहयोग – 3 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय नौकरी, मासिक आय 5000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी–7, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों दृष्टिकोण जानने के बाद 82.1% सहमति तथा 17.8% असहमति प्राप्त होती है।
17. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–5, आपसी सम्बन्ध संवेगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 4 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–1, निर्णय लेने में सहयोग–2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय कृषि, मासिक आय 5000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –12, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–1, छात्रों का दृष्टिकोण जानने के बाद 83.1% सहमति तथा 16.8% असहमति प्राप्त होती है।
18. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–3, आपसी सम्बन्ध संवेगात्मक, परिवार का स्तर मध्यम, विचारों की सहमति 3 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–1, निर्णय लेने में सहयोग–3 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय कृषि, मासिक आय 15000, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–2, माता की शिक्षा 10वीं पास, छात्रों का दृष्टिकोण जानने के बाद 79: सहमति तथा 20.9% असहमति प्राप्त होती है।
19. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–4, आपसी सम्बन्ध संवेगात्मक, परिवार का स्तर निम्न, विचारों की सहमति 3 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–3, निर्णय लेने में सहयोग–4 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय अध्यापन, मासिक आय 14000, सुविधा के लिए मेज–कुर्सी –4, आने–जाने के लिए वाहनों की संख्या–2, छात्रों की सहमति 84.6% छात्रों की असहमति 15.4% प्राप्त होती है।
20. अध्यापक के परिवार के सदस्यों की संख्या–2, आपसी सम्बन्ध सहयोगात्मक, परिवार का स्तर उच्च, विचारों की सहमति 2 सदस्यों द्वारा, त्यौहार प्रमुख–2, निर्णय लेने में सहयोग – 2 सदस्यों द्वारा, मुख्य व्यवसाय अध्यापन, मासिक आय 15000, माता–पिता की शिक्षा 5वीं, 8वीं पास छात्रों की सहमति 81.5% छात्रों की असहमति 18.4% प्राप्त होती है।

तालिका 2: अध्यापक के अभिभावकों की शिक्षा का शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन

अभिभावकों की शिक्षा	शिक्षण स्तर का साकारात्मक पक्ष	शिक्षण स्तर का नाकारात्मक पक्ष
10th	72.5%	27.5%
10th	75%	25%
10th	79.4%	20.6%
10th	79%	21%
8th	81.5%	18.5%
5th	80%	20%
B.A.	78.4%	21.6%
12th	78.7%	21.3%

अध्ययकर्ती द्वारा उपयुर्क्त तालिका के आधार पर अध्यापकों के अभिभावकों की शिक्षा की शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए छात्रों से पूछने पर यह पाया गया कि जिन अध्यापकों के अभिभावक 10वीं पास हैं, उनके प्रति 79.4% छात्रों ने सहमति प्रकट की और केवल 20.6% छात्रों ने असहमति प्रकट की। इसी प्रकार जिन अध्यापकों के अभिभावक 8वीं पास है। उनके प्रति 81.5% छात्रों ने सहमति प्रकट की और केवल 18.5% छात्रों ने असहमति प्रकट की। जिन अध्यापकों के अभिभावक ग्रेजुएट है। उनके प्रति 78.4% छात्रों ने सहमति प्रकट की और 21.6% छात्रों ने सहमति प्रकट की। इससे यह पता चलता है कि चाहे अभिभावक अधिक पढ़े–लिखे हो या कम। उनकी शिक्षा शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता।

निष्कर्ष रूप से यह पाया गया कि अध्यापकों के अभिभावकों की शिक्षा का उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता।

तालिका 3: अध्यापक की जाति का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव का अध्ययन

अध्यापकों की जाति	शिक्षण स्तर का साकारात्मक पक्ष	शिक्षण स्तर का नाकारात्मक पक्ष
अनुसूचित जाति	79-8%	20-2%
सामान्य जाति	80-3%	19-7%

अध्ययकर्ती द्वारा उपयुर्क्त सारणी के आधार पर अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर अध्यापक की जाति के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए छात्रों से पूछने पर यह पाया गया कि जो अध्यापक अनुसूचित जाति के थे उनके प्रति 79-8% छात्रों ने सहमति प्रकट की और 20.2% छात्रों ने असहमति प्रकट की। इसी प्रकार जो अध्यापक सामान्य जाति के है उनके प्रति 80.3% छात्रों ने सहमति प्रकट की और केवल 19-7% छात्रों ने असहमति प्रकट की।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि चाहे अध्यापक सामान्य जाति के हो या अनुसूचित जाति का उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता।

तालिका 4: अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर निवास स्थान के प्रभाव का अध्ययन

अध्यापकों का निवास स्थान	शिक्षण स्तर का साकारात्मक पक्ष	शिक्षण स्तर का नाकारात्मक पक्ष
ग्रामीण	79%	21%
शहरी	72-5%	28-5%

अध्ययकर्ती द्वारा ऊपर लिखित तालिका के आधार पर अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर अध्यापकों के निवास स्थान के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए छात्रों से पूछने पर यह पाया गया कि जो अध्यापक ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं उनके प्रति 79% छात्रों ने सहमति प्रकट की और 21% छात्रों ने असहमति प्रकट की। इसी प्रकार जो अध्यापक शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित है उनके प्रति 72-5% छात्रों ने सहमति प्रकट की और केवल 28-5% छात्रों ने असहमति प्रकट की।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि चाहे अध्यापक ग्रामीण क्षेत्र से हो या शहरी क्षेत्र से उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता।

तालिका 5: अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर उनके लिंग के प्रभाव का अध्ययन

अध्यापकों का निवास स्थान	शिक्षण स्तर का साकारात्मक पक्ष	शिक्षण स्तर का नाकारात्मक पक्ष
अध्यापिका	80%	20%
अध्याप	76-2%	23-8%

अध्ययकर्ता द्वारा ऊपर लिखित तालिका के आधार पर अध्यापकों की शिक्षा कुशलता पर अध्यापकों के लिंग के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए छात्रों से पूछने पर यह पाया गया कि जो महिला अध्यापक है उनके प्रति 80% छात्रों ने सहमति प्रकट की और 20% छात्रों ने असहमति प्रकट की। इसी प्रकार पुरूष अध्यापक के प्रति 76.2% छात्रों ने सहमति प्रकट की और केवल 23.8% छात्रों ने असहमति प्रकट की।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर लिंग का कोई प्रभाव नही पड़ता चावे वो अध्यापक पुरूष हो या महिला अध्यापक।

तालिका 6: ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले अध्यापकों की शिक्षण कुशलता के प्रभाव का अध्ययन

क्षेत्र	शिक्षण स्तर का सकारात्मक पक्ष	शिक्षण स्तर का नाकारात्मक पक्ष
ग्रामीण	79%	21%

अध्ययकर्ती द्वारा ऊपरलिखित सारणी के आधार पर अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर अध्यापक के क्षेत्र के प्रभाव का जानने के लिए छात्रों से पूछने पर यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र में रह रहे अध्यापकों का उनकी शिक्षण कुशलता पर प्रभाव पड़ता है या नही तो 79% छात्रों ने साकारात्मक उत्तर दिया और 21% छात्रों ने असाकारात्मकता प्रकट की।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि शिक्षण कुशलता पर अध्यापक के क्षेत्र का अधिक प्रभाव नही पड़ता।

तालिका 7: शहरी क्षेत्र में रहने वाले अध्यापकों की शिक्षण कुशलता के प्रभाव का अध्ययन

क्षेत्र	शिक्षण स्तर का साकारात्मक पक्ष	शिक्षण स्तर का नाकारात्मक पक्ष
ग्रामीण	79%	21%

अध्ययकर्ती द्वारा ऊपरलिखित सारणी के आधार पर अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर अध्यापक के क्षेत्र के प्रभाव का जानने के लिए छात्रों से पूछने पर यह पाया गया कि जो अध्यापक शहरी क्षेत्र में रहते हैं उनकी शिक्षण कुशलता के प्रति 79% छात्रों ने सहमति प्रकट की तथा 21% छात्रों ने असहमति प्रकट की।

निष्कर्ष से यह कहा जा सकता है कि शिक्षण कुशलता पर अध्यापक के क्षेत्र का अधिक प्रभाव नही पड़ता।

परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव

भूमिका

अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में शिक्षण कुशलता के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण सम्बन्धी आंकड़ों का

विश्लेषण एवं अध्ययन करने के पश्चात जो परिणाम अथवा निष्कर्ष सामने आए हैं, उनका विवरण इस प्रकार है। इस अध्ययन में सीमाएं और सुझाव भी शामिल किए गए हैं।

अध्ययन के परिणाम

1. अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों का उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही है।
2. अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर अध्यापकों के अभिभावकों की शिक्षा चाहे कम या अधिक कोई प्रभाव नही है।
3. अध्यापक चाहे सामान्य जाति हो चाहे अनुसूचित जाति की अध्यापक की शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही है।
4. अध्यापक चाहे ग्रामीण क्षेत्र का हो चाहे शहरी क्षेत्र का उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही है।
5. अध्यापक महिला हो चाहे पुरूष, उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही है।
6. ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले अध्यापक की शिक्षण कुशलता पर भी उनके क्षेत्र का कोई प्रभाव नही है।
7. शहरी क्षेत्र से आने वाले अध्यापक की शिक्षण कुशलता पर भी उनके क्षेत्र का कोई प्रभाव नही है।

अध्ययन का निष्कर्ष

अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थितियों का उनको शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता चाहे अध्यापक के परिवार के रहन सहन का स्तर निम्न हो चाहे उच्च स्तर हो उससे अध्यापक की शिक्षण कुशलता प्रभावित नहीं हो सकती क्योंकि अध्यापक के पढ़ाने का ढंग इत्यादि अधिक प्रभावित नहीं हो सकते। इसी तरह चाहे अध्यापकों के अभिभावक पढ़े लिखे हों या कम पढ़े लिखे हो तो उन अध्यापकों की शिक्षण कुशलता प्रभावित नहीं हो सकती क्योंकि अध्यापक की अपनी शिक्षण कुशलता उसकी अपनी शिक्षा पर निर्भर करती है। अध्यापक की शिक्षण कुशलता पर अध्यापक की जाति का अधिक प्रभाव नहीं देखा गया क्योंकि अध्यापक की शिक्षण कुशलता को अध्यापक की योग्यता प्रभावित करती। इसलिए अध्यापक चाहे सामान्य जाति का हो या अनुसूचित जाति का उसके शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता। अध्यापक का मूल निवास यदि ग्रामीण या शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित हो तो इससे अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि अध्यापक के व्यवहार में या उसके पढ़ाने के ढंग में उनके रहने का स्थान का नहीं उनकी योग्यता का प्रभाव पड़ता है न कि अध्यापकों के क्षेत्र का।

अध्यापक यदि महिला है या पुरूष उससे शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही पड़ता क्योंकि अध्यापकों की शिक्षण कुशलता पर उनके पढ़ाने के ढंग का तथा अध्यापकों की योग्यता का प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. योग्य एवं कुशल अध्यापकों के द्वारा बालकों को उचित शिक्षा दी जाएगी।
2. अच्छे कुशल, योग्य शिक्षकों की आवश्यकता बालकों को मार्ग–दर्शन के लिए आगे बढ़ाएंगे।
3. शिक्षक की कार्यविधि से अध्यापक को घरेलू परिस्थिति सम्बन्ध अच्छे बनेंगे।
4. शिक्षक अपने संवेगों का उचित विकास करेगा इसके लिए पहले उसे अपने वातावरण में विकास करना महत्वपूर्ण है।
5. शिक्षक अपने ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयत्न करेगा।
6. अध्यापक चाहे महिला हो या पुरूष इससे उनकी शिक्षण कुशलता पर कोई प्रभाव नही देखा जाएगा।
7. अध्यापक अपनी शिक्षण कुशलता को बढ़ाकर अपने शिक्षण स्तर को उच्च करने का प्रयास करेगा।

अध्ययन की परिसीमाएं

1. इस अध्ययन के न्यायदर्श में 220 इकाइयों को लिया गया है। यह अध्ययन बड़े न्यायदर्श में भी किया जा सकता है।
2. यह अध्ययन छात्रों के दृष्टिकोण तक ही सीमिति है।
3. यह अध्ययन ऐलनाबाद ब्लॉक तक सीमिति है। यह अन्य ब्लॉक में भी किया जा सकता है।

भविष्य में अनुसंधान के लिए सुझाव

1. बड़ा न्यायदर्श लेकर अध्यापकों की पारिवारिक परिस्थिति एवं शिक्षण कुशलता के बीच सम्बन्ध पर अध्ययन किया जाए।
2. प्रस्तुत अध्ययन जे0बी0टी0 और बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों पर भी किया जाए।
3. विवाहिक एवं अविवाहित अध्यापकों की पारिवारिक चिंता एवं शिक्षण कुशलता के बीच संबंध का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।
4. अध्यापकों की कुशलता का, विद्यार्थियों के गृह परीक्षा एवं बोर्ड की परीक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
5. भारत की वर्तमान स्थिति में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शिक्षण कुशलता के बीच सह–संबंध का अध्ययन काफी बड़े पैमाने पर अत्याधिक आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Abdul Samad. Study of organizational climate of Government High School of Chandigarh and its effect on job satisfaction of teachers Indian Educational abstract, 1998, 5.
2. Ahmad Q. Determinants of job involvement among teachers Indian Educational abstract, 1998, 5.
3. Ameerjan MS, Thimmappa MS. extraversion and neuroticism as relative to socio-economic level and caste affiliation, Indian Educational abstract, 1993, 5, 1998.
4. Baroun KA, Sen Anima. The effects of extraversion – introversion time of day on the judgement of short time intervals, Indian Educational abstract, 1996, 5, 1998.
5. Bhanout KM. Research Methodology, Laxmi Book Depot, Bhiwani.
6. Daguar BS. Relationship between neuroticism, anxiety and creative thinking in the context of extraversion, psychoticism and sex, Fifth survey of Education Research, 1988; 2, 1988-92.
7. Gupta Nirmal. Roll of Education and Teacher in developing Indian Society Literature Publication, Agra.
8. Sharma RA. Comparative Education, R. Lal Book Depot, Meerut, 2008.
9. Walia JS. Philosophical and Sociological Basis of Education Pal-Publication, N.A.-11 Gopal Nagar, Jalandhar, 2005.
10. Sexsena Saroj. Philosophical and Sociological Basis of Education Raja Balwant Singh, College of Agra – 3, Ludhiyana, 2004-2007.